भगत कबीर – सबद ३८

रे जीअ निलज लाज तुोहि नाही ॥

रागु गउड़ी भी सोरठि भी, भगत कबीर, गुरु ग्रंथ साहिब, ३३०

रे जीअ निलज लाज तुोहि नाही ॥
हरि तजि कत काहू के जाँही ॥१॥ रहाउ ॥
जा को ठाकुरु ऊचा होई ॥
सो जनु पर घर जात न सोही ॥१॥
सो साहिबु रहिआ भरपूरि ॥
सदा संगि नाही हरि दूरि ॥२॥
कवला चरन सरन है जा के ॥
कहु जन का नाही घर ता के ॥३॥
सभु कोऊ कहै जासु की बाता ॥
सो संम्रथु निज पति है दाता ॥४॥
कहै कबीरु पूरन जग सोई ॥
जा के हिरदै अवरु न होई ॥५॥३८॥

सार: सर्वव्यापकता का सिद्धांत यह बताता है कि हर जीव और हर पल के भीतर एक ही मूल वास्तविकता व्याप्त है। यह बल देता है कि जीवन का स्रोत सृष्टि से अलग नहीं है बल्कि लगातार उसी के माध्यम से स्वयं को प्रकट करता है। अंतर पर ध्यान देने से हम केवल ऊपरी सतह तक ही सीमित रह जाते हैं जबकि छिपे एकत्व को पहचानने से अस्तित्व के गहरे सार का पता चलता है। उदाहरण के लिए, पेड़, नदी, जानवर और मनुष्य अलग-अलग लग सकते हैं, फिर भी, वह सभी एक ही सार्वभौमिक प्रक्रिया से उत्पन्न होते हैं और अस्तित्व के ताने-बाने में एक-दूसरे से जुड़े होते हैं। विविधता अलग-अलग और स्वतंत्र इकाइयों का संग्रह नहीं है बल्कि उस एक ही वास्तविकता के अनेक रूपों में प्रकट होने की प्रक्रिया है जो हमारे आसपास की दुनिया की समझ को और समृद्ध करती है।

रे जीअ निलज लाज तुोहि नाही ॥
हे बेशर्म अंतरात्मा, तुझे ज़रा भी शर्म नहीं है। इससे पता चलता है कि जो मन स्वयं को परखता नहीं, वह अपने ही भ्रम का इतना आदी हो जाता है कि उसे अपनी वास्तविकता का पता ही नहीं चलता।

हरि तजि कत काहू के जाँही ॥१॥ रहाउ ॥
सर्वव्यापी चेतना को छोड़कर किसी और के पास क्यों जाना। इसका अर्थ है कि जब मन एकता से अलग होता है तब वह अस्थायी चीज़ों और सतही पहचानों में, संतुष्टि पाने की व्यर्थ खोज में उलझ जाता है। (१)(विराम)

जा को ठाकुरु ऊचा होई ॥
जिनका मालिक सर्वोच्च है। इसका अर्थ है कि आंतरिक विवेक सार्वभौमिक नियम को ही, अपना सबसे बड़ा मार्गदर्शक मानता है।

सो जनु पर घर जात न सोही ॥१॥
ऐसे व्यक्ति का किसी और के घर शरण लेना शोभा नहीं देता। यह दर्शाता है कि जब अंतरात्मा सत्य पर टिकी होती है तब वह बाहरी स्रोतों में संतुष्टि, पहचान या सुरक्षा खोजने की ओर वापस नहीं मुड़ती। (१)

सो साहिबु रहिआ भरपूरि ॥
वह थामने वाली शक्ति पूरे अस्तित्व में व्याप्त है। यह मन को अलगाव की सोच से आगे बढ़ने और यह पहचानने के लिए प्रेरित करता है कि जिसे वह खोज रहा है, वह पहले से ही जीवन में, हर अनुभव के भीतर और आस-पास मौजूद है।

सदा संगि नाही हरि दूरि ॥२॥

सर्वव्यापी वास्तविकता सदैव हमारे साथ है, वह कभी दूर नहीं होती। यह सर्वव्यापकता के सिद्धांत को दर्शाता है और यह पहचान कराता है कि तृप्ति सभी के भीतर मौजूद अधिकता से मिलती है। (२)

कवला चरन सरन है जा के ॥

समृद्धि का स्रोत उस शक्ति के अधीन है। यह बताता है कि सभी प्रकार कीअधिकता, चाहे वह बौद्धिक हो या भौतिक, ज्ञान के अधीन है।

कहु जन का नाही घर ता के ॥३॥

हे विनम्र साधकों, बताओ, उसके घर में क्या नहीं है। यह खोज के समापन का प्रतीक है, जहाँ चेतना यह समझती है कि सारी प्रचुरता आपकी अपनी चेतना की गहराइयों में ही निहित है। (३)

सभु कोऊ कहै जासु की बाता ॥

हर कोई उसकी महानता और गुणों की बातें करता है। यह संकेत करता है कि सत्य के बारे में बोलना और सत्य को वास्तव में अनुभव करके अपने जीवन में उतारना एक ही बात नहीं है।

सो संम्रथु निज पति है दाता ॥४॥

वह ही सर्व-समर्थ होते हैं जो यह समझते हैं कि उनकी सत्यनिष्ठा ही भरोसे का आधार है। यह आंतरिक निर्भरता के सिद्धांत को उजागर करता है जहाँ व्यक्ति की आत्म-जागरूकता ही वह शक्ति है जो उसे बनाए रखती है, उसकी रक्षा करती है और उसका पोषण करती है। (४)

कहै कबीरु पूरन जग सोई ॥

कबीर कहते हैं कि इस दुनिया में वही लोग वास्तव में पूर्ण हैं। यह पूर्णता सीखने के सभी अनुभवों से प्राप्त होती है और जीवन को आंतरिक संतोष और सामंजस्य के साथ जीने में सहायता करती है।

जा के हिरदै अवरु न होई ॥५॥३८॥

उनके हृदय में परायेपन का कोई भाव नहीं रहता। यह एकत्व की उस अवस्था को दर्शाता है जहाँ द्वैत मिट जाता है और अंतरात्मा एकात्मता को अपना लेती है। (५)(३८)

तत्त्व: भगत कबीर कहते हैं कि पूर्णता हमारे भीतर ही मिलती है, न कि दुनियावी उपलब्धियों को पाने के प्रयास में। जिन लोगों ने अपने अलग-अलग जीवन-अनुभवों से समझदारी हासिल की है, वही इस पूर्णता को जीते हैं। संतुष्टि भौतिक चीज़ें जमा करने से नहीं मिलती, बल्कि यह भीतर से पूरी तरह संतुष्ट होने और यह आभास होने से आती है कि किसी वस्तु की कोई कमी नहीं है। यह स्थिति सृष्टि में एकता की स्पष्ट समझ दर्शाती है। इस दृष्टिकोण को अपनाकर हम स्वयं को व्यापक एकता के साथ सामंजस्यपूर्ण रूप से जोड़ सकते हैं।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com